भारतीय इतिहास

के कुछ विषय भाग - 1

बंधुत्व, जाति और वर्ग

विद्या दृष्टि

The Vision Of Education

CLASSES AVAILABLE :-

6th to 10th

- Maths
- Science
- English
- Sst

11th & 12th

- Pol. Science
- History
- Economics
- Accounts
- Maths
- English
- sociology

C-136A, Laxmipark, Near M. S. Memorial Public School, Nangloi, Delhi - 110041

M H Rabbani : 8700467219

(Chief Mentor & Coordinator)

@vidyadrishti

सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन
(600 BC - 600 AD)

(a) वन क्षेत्रों में कृषि का विस्तार हुआ।
(b) शिल्पकारों के रूप में एक विशिष्ट सामाजिक समुदाय का जन्म हुआ।
(c) संपत्ति के असमान वितरण ने सामाजिक विषमताओं को अधिक प्रखर बना दिया।

इतिहासकारों द्वारा साहित्य, ग्रंथ और अभिलेख का प्रयोग

(a) समकालीन समाज को समझने के लिए।
(b) समाज में प्रचलित रीति-रिवाजों को समझने के लिए।
(c) समकालीन इतिहास को लिखने के लिए।
(d) सामाजिक, संबंध, धर्म एवं जाति को समझने के लिए ।
(c) अभिलेखों के माध्यम से ऐतिहासिक राजाओं एवं उनके साम्राज्य को समझने के लिए।
(d) समकालीन आर्थिक गतिविधियों तथा अंतर्राज्यीय एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को समझने के लिए।

ग्रंथ एवं अभिलेख से संबंधित सावधानियाँ

- प्रत्येक ग्रंथ, अभिलेख एवं साहित्य किसी न किसी समुदाय विशेष के दृष्टिकोण से लिखा गया होता है ।
- अत: ऐतिहासिक स्त्रोत के रूप में इनका प्रयोग करते समय निम्न सावधानी बरतनी चाहिए :-

(a) किसके द्वारा लिखे गए है?
(b) क्या लिखा गया है ?
(c) किसके / किनके लिए रचना की गई है?
(d) इनका प्रचार प्रसार किस प्रकार हुआ ?
(e) किस भाषा का प्रयोग हुआ है ?

महाकाव्य

- विर गाथा
- रामायण और महाभारत आर्यों के दो महाकाव्य हैं।
- भारतीय इतिहास का महाकाव्य युग।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

महाभारत

शान्तनु (राजा)

- कुरु वंश
- चन्द्रवंशी राजा
- गंगा यमुना के बीच के क्षेत्र पर नियंत्रण
- राजधानी हस्तिनापुर

पुत्र

भीष्म पितामह

- ब्रह्मचारी

विचित्रविर्य

- राजा

by - M H Rabbani

विचित्रविर्य

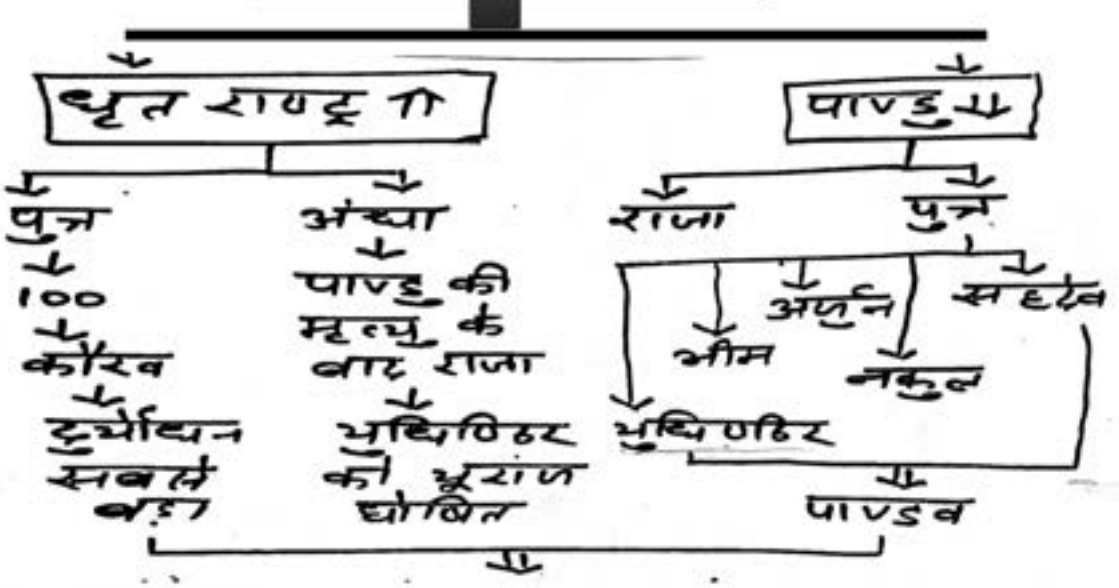

- कौरव और पांडव में तनाव
- पंचाल के राजा द्रौपद की पुत्री द्रौपदी के स्वयंवर शर्त को अजुर्न ने पूरा किया।
- द्रौपदी का अर्जुन (पाण्डव) से विवाह।
- पाण्डवों की शक्ति में वृद्धि।
- कौरवों से आधा राज्य प्राप्त कर इंद्रप्रस्थ नामक शहर बसाया।
- षड्यंत्र, पाण्डव एवं कौरव के बीच।
- जुआ में पाण्डव पराजित।
  - 👉 आधा राज्य भी छीन गया
  - 👉 द्रौपदी को भी हार गयें
  - 👉 12 वर्ष वनवास तथा 1 वर्ष का अज्ञातवास
- वनवास से वापसी के बाद आधे राज्य की पाण्डव द्वारा माँग
- युद्ध, कुरुक्षेत्र,18 दिन
- श्री कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया ➖ गीता
- पाण्डव विजयी, युधिष्ठिर राजा
- उसके बाद अर्जुन का पोता परीक्षित राजा बना।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

🔴 निष्कर्ष :-

👉 महाभारत की मूलकथा बंधुता और उत्तराधिकार के संबंधों पर टिकी धारणा पर बल देती है।

👉 युद्ध का मूल कारण ➖ भूमि और सत्ता

महाभारत एक गतिशील ग्रंथ

👉 **हिन्दु परंपरा के अनुसार**
- रचयिता महर्षि व्यास
- श्री गणेश से शुरू

👉 **इतिहासकारों के अनुसार**
- एक व्यक्ति रचयिता नहीं
- समय- समय पर बहुत कुछ जोड़ा गया है।
- गतिशील ग्रंथ

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

by - M H Rabbani

गतिशील ग्रंथ

(a) 1 लाख से अधिक श्लोक, 1 मनुष्य द्वारा लिखा जाना संभव नहीं।

(b) मूल कथा के रचयिता भाट सार्थी (सूत), इनकी वीर गाथाओं का प्रेषण मौखिक रूप से हुआ और आगे चलकर 5वीं शताब्दी में ब्राह्मणों ने इसे लिख दिया।

(c) ब्राह्मणों के द्वारा शैव मत एवं विष्णु मत की कहानीयाँ जोड़ दी गई।

(d) समय के साथ - साथ अन्य शिक्षाप्रद कहानियाँ भी जुड़ती गईं। जैसे :-

- दुष्यंत और शकुंतला
- नल और दमयन्त
- विदुला और संजय
- सावित्री

🔴 निष्कर्ष :-

👉 समय के साथ-साथ अनेक पाठांतर भिन्न भाषाओं में लिखे गयें।

👉 क्षेत्र विशेष की कहानीयाँ इसमें समाहित कर ली गई ।

👉 इनकी पुर्नव्यख्या की गई।

महाभारत का समालोचनात्मक संस्करन

👉 1919 ई.,संस्कृत के सुप्रसिद्ध विद्वान **श्री. वी. एस सुकथांकर** के नेतृत्व में कार्य शुरु हुआ।

👉 47 वर्ष में तैयार, 13 हजार पृष्ठों में प्रकाशन

👉 **कैसे तैयार किया गया ?**

- विभिन्न भागों से विभिन्न लिपियों में लिखी गई पाण्डुलिपियाँ एकत्रीत की गई।
- उन श्लोकों का चयन जो लगभग सभी पाण्डुलिपियों में थे।

👉 **दो महत्वपूर्ण तथ्य उभर कर सामने आयें :-**

(1) संस्कृत की पाण्डुलिपियों के कई पाठों में अनेक अंशों में समानता थी।

(2) समय के साथ महाभारत में अनेक क्षेत्रीय विभेद उभर कर सामने आ रहे हैं।

महाभारत की सबसे चुनौतिपूर्ण उपकथा

- द्रौपदी से पाण्डव का विवाह
- बहुपती विवाह का उदाहरण
- इतिहासकारों के अनुसार यह प्रथा प्रशासकों के किसी वर्ग में, किसी काल में रही होगी।

रामायण

👉 **रचनाकार ऋषि बालमिकी, 5 कांड**

👉 वर्तमान में 24 हजार श्लोक और 7 कांड

👉 **रचना काल को लेकर मतभेद :-**

- अधिकांश भारतीय 3000 ई० पू० से पहले का मानते हैं।
- कुछ इतिहासकार 5 वीं से 6ठी शताब्दी ईसा पू. का बताते हैं।
- भाषा के आधार विंटरनिटज के अनुसार वर्तमान रमायण का रचनाकाल 200 ई० पू० है।

🔴 **निष्कर्ष :-**

- रामायण महाभारत से पहले लिखी गई थी।
- क्योंकि महाभारत में रामायण के पात्रों का वर्णन है जबकि रामायण में महाभारत का नहीं।
- अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र श्री राम चन्द्र जी की वीरता एवं जीवन चरित्र का वर्णन है।

by - M H Rabbani

महाकाव्य का महत्व

👉 महाकाव्य काल के भारतियों के जीवन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त होती है।

- सामाजिक जीवन
- राजनीतिक जीवन
- आर्थिक जीवन
- धार्मिक जीवन

👉 भारतीय सभ्यता और संस्कृति की रक्षा करने में विशेष सहायता की है।

ग्रंथ की विषयवस्तु

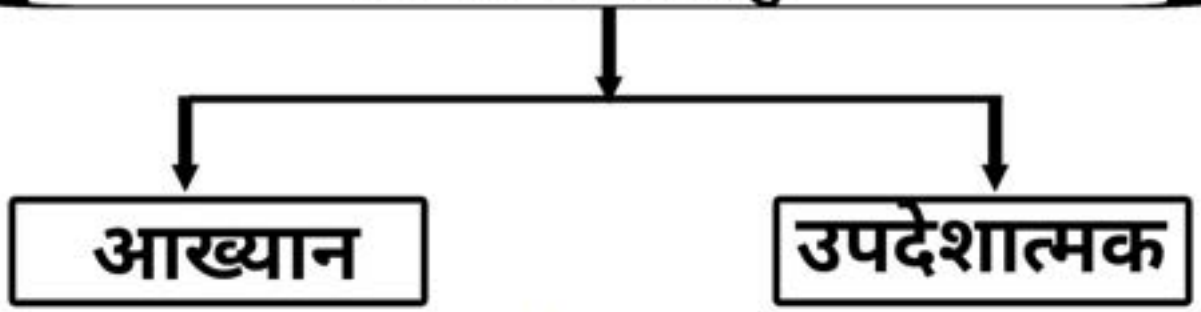

- कथाओं का संग्रह
- आचरण एवं व्यवहार से संबंधित उपदेश एवं निर्देश

महाभारत की विषयवस्तु और भाषा

👉 **भाषा :-**

- साधारणतया इतिहासकार किसी ग्रंथ का विश्लेषण करते समय उसकी भाषा और आकार को आधार बनाते हैं।
- महाभारत के पाठ, जिनका हम अध्ययन कर रहे हैं संस्कृत में है परंतु महाभारत में प्रयुक्त संस्कृत वेदों और प्रशस्तियों की संस्कृत से सरल है।
- अतः यह संभव है कि इस ग्रन्थ को व्यापक स्तर पर समझा **जाता था।**

👉 **विषयवस्तु :-**

- महाभारत की विषयवस्तु को इतिहासकार दो मुख्य शीर्षकों-आख्यान और उपदेशात्मक-के अंतर्गत रखते हैं।
- आख्यान में कहानियों का संग्रह और उपदेशात्मक भाग में सामाजिक आचार-विचार के मानदंडों का चित्रण है।
- अधिकतर इतिहासकार इस विषय पर सहमत हैं कि महाभारत वस्तुतः नाटकीय कथानक था जिसमें उपदेशात्मक अंश बाद में जोड़े गए।
- महाभारत का सबसे महत्त्वपूर्ण उपदेशात्मक अंश भगवद्गीता है जहाँ कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में **श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हैं।**

👉 **इतिहास :-**

- आरम्भिक संस्कृत परम्परा में महाभारत को 'इतिहास' की श्रेणी में रखा गया है।इस शब्द का अर्थ है "ऐसा ही था "।
- इतिहासकारों का मानना है कि स्वजनों के बीच हुए युद्ध की स्मृति ही महाभारत का मुख्य कथानक है। यद्यपि कुछ के अनुसार युद्ध की पुष्टि किसी और साक्ष्य से नहीं होती है।

by - M H Rabbani

परिवार

👉 **संस्कृत ग्रंथ में प्रयुक्त शब्द :-**

- **कूल = परिवार**
- **जाति = बन्धु-बांधव**
- **वंश = पीढ़ी दर पीढ़ी एक ही कुल के लोग**

👉 परिवारिक रिश्ते नैसर्गिक एवं रक्त संबंध पर आधारित होते हैं ।

👉 भिन्न समाज में परिवार की भिन्न परिभाषा।

👉 परिवार और बंधुत्व संबंधी विचार से लोगों की सोच का पता चलता है और सोंच व्यक्ति के क्रियाकलाप को नियंत्रित करते हैं।

👉 अतः इससे तत्कालीन समाज के रहन सहन एवं क्रियाकलाप की जानकारी मिलती है।

पितृवंशिकता

👉 वह परंपरा, जो पिता के बाद पुत्र, फिर पौत्र, प्रपौत्र इत्यादि को उत्तराधिकारी मानती है,पितृवांशिकता कहलाती है।

👉 लगभग 6ठी शताब्दी ईसा पू० के अधिकत्तर राजवंश इस परंपरा का अनुकरण करते थे।

👉 पिता की मृत्यु के बाद पुत्र, पुत्र न होने की स्थिति भाई एवं सगे संबंधियो को उत्तराधिकार मिलता था।

👉 महाभारत की मुख्य कथा वस्तु ने इस आदर्श को और सुदृढ किया है।

🔴 **विशिष्ट परिवारों में पितृवंशिकता महत्त्वपूर्ण रही इसके पत्र में निम्नलिखित तर्क दिये जा सकते हैं:-**

(i) महाभारत इसका महत्वपूर्ण उदाहरण है।

(ii) यह परंपरा पहले से मौजूद थी, महाभारत ने इसे और सुदृढ़ किया।

(iii) ऋगवेद (कर्मकाण्डीय ग्रंथ) के मंत्रों से पता चलताहै कि पितृवंशिकता शासक परिवारों के साथ-साथ ब्राह्मणों में भी प्रचलित थी।

👉 6ठी शताब्दी से पूर्व या बाद के अधिकतर राजवंश ने इसका अनुसरण किया।

👉 **अपवाद :- प्रभावति गुप्त**

मातृवंशिकता

- उत्तराधिकार की ऐसी परंपरा जिसमें वंश परंपरा माँ से जुड़ी होती है।
- इस परंपरा के अनुसार पैतृक संसाधनों पर पुत्रियों का भी अधिकार होता है।

संबंधि या जाति समूह

- रिश्तेदार का एक भाग परिवार।
- रिश्तेदार को ही तकनीक भाषा में जाति समूह कहा जाता है।

विवाह के नियम

विवाह की प्रमुख दो पद्धतियाँ :-

(i) अंतर्विवाह पद्धति

- एक ही गोत्र में विवाह
- दक्षिण भारत में प्रचलन

(ii) बहिर्विवाह पद्धति

- गोत्र से बाहर
- ब्राह्मणीय पद्धति के अनुकूल
- ऊची प्रतिष्ठा वाले घरों की छोटी उम्र की लड़कियों तथा नारियों का जीवन बहुत ध्यानपूर्वक नियमित किया जाता था ताकि उचित वक्त पे ऊचित पुरुष से उनका विवाह किया जा सके।
- विवाह में कन्या को भेंट देना पिता का महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्य।

by - M H Rabbani

विवाह से संबंधित प्रथा

(i) बहुपत्नी प्रथा :- एक पुरुष की कई पत्नीयाँ होने की सामाजीक परिपाटी।
(ii) बहुपति प्रथा :- एक स्त्री के कई -पति होने की परिपाटी।

गोत्र

- 1000 ई० पू० के आस पास एक ब्राह्मणीय पद्धति प्रचलन में आई जिसके अनुसार लोगों को गोत्र में वर्गीकृत किया गया।
- प्रत्येक गोत्र एक वैदिक ऋषि के नाम पर होता था।
- गोत्र के सदस्य ऋषि के वंशज माने जाते थे।

👉 **गोत्र के दो प्रमुख नियम :-**

(i) विवाह के बाद स्त्रीयों का गोत्र पिता के स्थान पर पति का।
(ii) एक ही गोत्र के सदस्य आपस में विवाह नही कर सकते।

👉 **वैदिक ऋषि के नाम पर गोत्र :-**

- कस्यप
- सांडिल्प
- वशिष्ठ
- अगिरा

👉 **सातवाहनों में गोत्र :-**

- गोत्र का सर्वजित पालन नहीं होता था।
- सातवाहन महाराणीयाँ अपने नाम के साथ पिता का गोत्र लगाये रखती थीं।

जाति प्रथा

विवाह और भोजन जैसे सामाजिक विषयों में कुछ लोगों के आपस मे संगठित हो जाने को जाति प्रथा कहते हैं।

👉 **जाति प्रथा की उत्पत्ति का कारण :-**

(a) रंग के आधार पर आर्यों और अनार्यों का दो जातियों मे विभाजन।
(b) कर्म के आधार पर विभाजित वर्णव्यवस्था में समायोजित न होने वालों को ब्राह्मणों द्वारा जाति में वर्गीकृत किया जाने लगा।

👉 **जाति प्रथा के गुण :-**

(a) पीढ़ी दर पीढ़ी दर एक ही व्यवसाय को करने से निपुणता आती है।
(b) विशेष जाति के लोगों में भाईचारे की भावना का विकास होता है।

👉 **जाति प्रथा के अवगुण :-**

(a) समाज का अनेक वर्गों में विभाजन
(b) वर्गों के बीच द्वेष और ईर्ष्या
(c) समाज का अनेक जाति एवं उपजाति में विभाजन
(d) राजनीतिक एवं राष्ट्रीय एकता की भावना का आभाव
(e) रक्षा की जिम्मेदारी सिर्फ क्षत्रीयों की,जो राष्ट्र की सुरक्षा के लिए ठिक नहीं।
(f) हिन्दू धर्म और, संस्कृति के उन्नति के मार्ग में बाधा।
(g) इसने हिन्दुओं के दृष्टिकोण को संकुचित बना कर रूढ़िवादी और अंधविश्वासी बना दिया गया।
(h) एक व्यक्ति को अपनी जाति अनुसार व्यवसाय चुनना पड़ता है, अतः व्यक्तित्व के विकास में बाधक।

by - M H Rabbani

👉 **जाति प्रथा का भविष्य :-**

(a) निकट भविष्य में उन्मूलन मुश्किल
(b) पश्चिमी शिक्षा, वैज्ञानिक उन्नति और आधुनीकीकरण ने जाति प्रथा की जटीलता को कम किया है।
(c) वर्तमान में किसी भी जाति का कोई निश्चित व्यवसाय नहीं।
(d) भोजन और विवाह संबंधि प्रतिबंध भी खत्म, अंतर्जातीय विवाह शुरू हो रहे हैं।
(e) धार्मिक-सामाजिक आंदोलनों के कारण जाति प्रथा के बंधन कमजोड़ हो रहे हैं।
(f) संविधान द्वारा अस्पृश्यता का अंत,अंतरजातीय विवाहों को कानूनी मान्यता।
(g) सरकारी भवन एवं शिक्षा के केन्द्र सबके लिए एक समान से खुलें हैं।

● निष्कर्ष :- पूर्णतः उन्मूलन तो संभव नहीं लेकिन इसके दोषों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

धर्मशास्त्र और धर्मशुत्र

- ब्राह्मणों द्वारा बनाये गये आचार संहिता का संकलन लगभग 500 ई० पू० में जिन संस्कृत ग्रंथों में किया गया उन्हें धर्मशास्त्र या धर्मसूत्र कहा गया।
- सबसे महत्वपूर्ण धर्म शास्त्र और धर्मसूत्र मनुस्मृति, जिसका संकलन लगभग 200 ई० पू० से 200 ई० के बीच हुआ।

शास्त्रों के अनुसार वर्ण

👉 आजीविका कमाने के उद्देश्य से ब्राह्मणों द्वारा समाज को चार वर्णों में विभाजित किया गया।

👉 **धर्मशास्त्र के अनुसार इन वर्णो का आदर्श काम :-**

(1) ब्राह्मण
- अध्ययन, वेदों की शिक्षा देना
- यज्ञ करना और करवाना
- दान देना और लेना

(2) क्षत्रीय
- युद्ध करना, लोगों की सुरक्षा
- इंसाफ करना, वेदों का पाठन
- यज्ञ करवाना, दान देना

(3) वैश्य
- वेदों का पाठन, यज्ञ करवाना
- दान देना, व्यापार करना
- कृषि और गौपालन

(4) शूद्र
- तीनों वर्णो की सेवा करना

by - M H Rabbani

👉 **इन नीतियों के अनुसरण लिए ब्राहाणों द्वारा अपनायी गई नीतियाँ :-**

(a) वर्ण व्यवस्था को दैवीय व्यवस्था बताया
(b) राजाओं को इन नियमों को अपने क्षेत्रों में पालन करने का उपदेश
(c) लोगों को भरोसा दिलाया कि प्रतिष्ठा जन्म के अनुसार
(d) ऋग वेद के **पुरुषसूक्त मंत्र** के अनुसार ब्रह्मा के
- मुख से — ब्राह्मण
- भुजा से — क्षत्रीय
- जंघा से — वैश्य
- पाँव से — शूद्र

(e) धर्मशास्त्रों के अनुसार सिर्फ क्षत्रीय राजा हो सकते थें।

धर्मशास्त्र से संबंधित अचार संहिता का पालन

धर्मशास्त्र से संबंधित अचार संहिता का सार्वभौमिक रूप से पालन नहीं होता था। कारण :-
(a) वास्तविक सामाजिक संबंध अधिक जटील थे।
(b) उपमहाद्वीप में फैली क्षेत्रीय विविधता।
(c) संचार की बाधाएँ।

by - M H Rabbani

अक्षत्रीय राजा के प्रमाण

(a) मौर्य वंश ब्राह्मणीय शस्त्रों के अनुसार निम्न कुल।
(b) शुंग तथा कण्व ब्राह्मण।
(c) शक शासक रूद्रदमन को ब्राह्मणीय ग्रंथ मलेच्छ और बरबर बताता है।
(d) सातवाहन, शासक गौतमी पुत्र सतकर्णी स्वयं को ब्राह्मण बताता था।
👉 वस्तुतः हर वह व्यक्ति राजा बन सकता था जो समर्थन और संसाधन जुटा सके।

मनुस्मृति के अनुसार धन अर्जित करने के तरीके

👉 **पुरुषों के लिए 7 तरीके :-**
(1) विरासत (ii) खोज (iii) खरीद (iv) विजित करके (v) निवेश (vi) कार्य (vii) उपहार स्वीकार करके
👉 **स्त्रीयों के धन अर्जित करने के तरीके :-**
(i) वैवाहिक अग्नि के समक्ष तथा विदाई के समय मिली भेंट।
ii) स्नेह के प्रतिक के रूप में भाई, मात्रा, पिता द्वारा दिया गया उपहार।
(iii) शादी के मिली भेंट तथा वह सब कुछ जो उसके अनुरागी पती से प्राप्त हो।

मनुस्मृति के अनुसार पैतृक संसाधनों पर नियंत्रण

(a) सभी पुत्रों में एक समान परंतु ज्येष्ठ पुत्र एक विशेष भाग का उत्तराधिकारी।
(b) स्त्रीयाँ पैतृक संसाधनों में हिस्सेदारी की मांग नहीं कर सकती है।
(c) विवाह के समय मिले स्त्री धन पर सिर्फ स्त्रियों का अधिकार।

मनुस्मृति के अनुसार चण्डालों के कार्य

(a) गाँव के बाहरी क्षेत्रो मे रहना होता था।
(b) फेंके गये बर्तनों का प्रयोग।
(c) मृत लोगों के कपड़े तथा गहने पहनते थे।
(d) रात मे गाँवो में आना जाना प्रतिबंधित।
(e) रिश्तेदार विहीन शव का अंतिम संस्कार।
(f) वधिक और सफाई कर्मचारी के तौर पर काम।

👉 फा - शिएन
- चीनी बौध यात्री, 5 th AD
- अछूतो को रास्ते पर करतल बजाते हुए चलना पड़ता था।

👉 श्वेन - त्सांग
- चीनी बौद्ध यात्री, 7 th AD
- बधिक एव सफाई कर्मचारी को नगर से बाहर निवास करना पड़ता था।

ब्राह्मणीय दृष्टिकोण

👉 हिन दृष्टि से देखते थें
- निषाद को। एकलब्ज़)
- यायावर पशुपालक को
- मलेच्छ, जिन्हें संस्कृत भाषा नहीं आती थी।

👉 अनुष्ठानित कामों को पुनीत और पवित्र मानते थे।
👉 कुछ समुदायों को अछूत मानते थे।
👉 चण्डाल को दूषित मानते थे।

by - M H Rabbani

प्राचीन समाज में अछूतों की स्थिति

(i) समाज में कुछ वर्गों को अछूत या अस्पृश्य समझा जाता था। इनको वर्ण व्यवस्था से बाहर माना जाता था।

(ii) ब्राह्मणों का विचार था कि अनुष्ठान आदि कर्म पवित्र थे और उन्हें संपादित करने वाले पवित्र लोगों से नहीं स्वीकार करते।

(iii) अछूतों द्वारा दूषित कार्य किए जाते थे जैसे शवों की अंत्येष्टि और मृत पशुओं को छूने वालों का चंडाल कहा जाता था।

(iv) उन्हें वर्ण व्यवस्था वाले समाज में सबसे निम्न कोटि में रखा जाता था। चाण्डालों को देखना और उनको स्पर्श करन अपवित्रकारी माना जाता था।

(v) मनुस्मृति के अनुसार चाण्डालों को नगर से बाहर रहना पड़ता था। ये फेंके हुए बर्तनों का प्रयोग करते थे मेरे हुए लोगों के वस्त्र और लोहे के आभूषण पहनते थे।

(vi) बौद्ध भिक्षु फा -शिएन के अनुसार अस्पृश्यों को सड़क पर चलते समय करतल बजाकर अपने आने की सूचना देनी पड़ती थी जिससे अन्य जन उन्हें देखने के दोष से बच जाएँ।

(vii) शवैन-त्याग के अनुसार बधिक और सफाई करने वालों को नगर से बाहर रहना पड़ता था।

👉 अब्राह्मणीय ग्रन्थों के विवरण से यह पता नहीं चला कि चाण्डालों ने शास्त्रों में निर्धारित अपने हीन जीवन को स्वीकार कर लिया था या नहीं। परन्तु यदा-कदा इन ग्रन्थों के चित्रण और ब्राह्मणीय ग्रन्थ में चित्रण में समानता है। कभी-कभी एक भिन्न सामाजिक वास्तविकता का भी संकेत मिलता है।

बंधुत्व और विवाह संबंधित ब्राह्मणीय नियमों का सर्वत्र अनुसरण नहीं

(1) पुत्र न होने पर भाई उत्तराधिकारी

- थानेश्वसर के शासक राज्यवर्धन की मृत्यु के बाद हर्षवर्धन
- रामगुप्त के बाद चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

(2) बंधु बाधंव उत्तराधिकारी एवं प्रभावति गुप्त जैसी स्त्रीयाँ राज सिहासन संभालती थी।

(3) सातवाहन शासकों की स्त्रीयाँ पिता के गोत्र को मानती थी।

(4) धर्मशास्त्र एवं धर्म शस्त्र में 8 प्रकार के विवाह का वर्णन है जिनमें से 4 को उत्तम माना गया है। इसका अर्थ है कि शेष 4 उन लोगों में प्रचलित होंगे जो ब्राहणीय नियमों का अनुसरण नहीं करते होंगे।

उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली विविधता

उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली विविधताएँ निम्नलिखित थी-

👉 कुछ ऐसे समुदाय थे जिन पर ब्राह्मणीय विचारों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

(क) संस्कृत साहित्य में जब ऐसे समुदायों का उल्लेख आता है तो उन्हें कई बार विचित्र असभ्य और पशुवत चित्रित किया जाता है। उदाहरणतया वन प्रांतर में बसने वाले लोग जिनके लिए शिकार और कंदमूल संग्रह करना जीवन-निर्वाह का महत्त्वपूर्ण साधन था, जैसे निषाद वर्ग जिससे एकलव्य का नाम जुड़ा माना जाता था।

(ख) यायावर पशुपालकों के समुदाय को भी शंका की दृष्टि से देखा जाता था क्योंकि उन्हें आसानी से बसे हुए कृषि कर्मियों के साँचे के अनुरूप नहीं ढाला जा सकता था। कभी-कभी उन्हें असंस्कृत भाषी मलेच्छ कह कर हेय दृष्टि से देखा जाता था। परन्तु इन लोगों में साथ एकीकरण की भावना थी क्योंकि इन लोगों के बीच विचारों और मतों का आदान-प्रदान होता था। उनके संबंधों के स्वरूप विषय में हमें महाभारत की कथाओं से ज्ञात होता है।

by - M H Rabbani

नए नगरों के उदभव से उतपन्न जटिलताएं

(a) सामाजिक जीवन जटील हो गया।
(b) नगरों के उदय से विचारों का आदान प्रदान हुआ जिसके कारण लोग आरंभिक विश्वासों और व्यवहारों पर प्रश्न चिन्ह उठाने लगें ।
(c) इस समस्या के समाधान के लिए ब्राह्मणों ने समाज के लिए एक विस्तृत आचार संहिता का निर्माण करना शुरू कर दिया।

सामाजिक अभिनायक और उनका समाज में स्थान

(a) भारतीय उपमहाद्वीप में सामाजिक अभिनायक :-

- दास
- भूमिहीन खेतीहर
- मजदूर
- शिकारी
- मछुआरे
- पशुपालक
- किसान
- ग्राम मुखिया
- शिल्पकार
- वणिक (बनिया ।

(b) सामाज में इनका स्थान इस बात पर निर्भर करता था कि आर्थिक संसाधनों पर उनका कितना नियंत्रण था।

पाण्डुलिपि

- हस्तलिखित लेख
- ताड़ के पत्तों पर या भोज पत्तों पर लिखा जाता था।

सामाजिक अनुबंध की बौद्ध अवधारणा और ब्राह्मणीय दृष्टिकोण

👉 **बौद्ध अवधारणा के अनुसार :-**

- राजा का पद न तो दैवीय और न ही पैतृक ।
- राजा का पद सामाजिक अनुबंध के सिद्धांत पर आधारित ।
- प्रजा राजा को कर देती है बदले में राजा उन्हें सुरक्षा प्रदान करता है।
- मनुष्य द्वारा ही इन सामाजिक अनुबंधों या सामाजिक संबंधों का निर्माण किया गया है। अतः मनुष्य इसमें बदलाव कर सकता है।

👉 **ब्राह्मनीय दृष्टिकोण :-**

- वर्णव्यवस्था के अनुसार निर्धारित, सामाजिक एवं आर्थिक संबंधों में परिवर्तनों नहीं हो सकता।
- क्योंकि वर्णव्यवस्था दैवीय है।

सुत्त पित्तक ग्रंथ का मिथक

- प्रारंभ में मनुष्य पुरी तरह से विकसित नहीं थे।
- वनस्पति संस्कार भी अविकसित था।
- सभी जीव शांति के एक निर्वाध लोक में रहते थे और प्राकृति से उतना ही लेते थे जितना जरूरत होता था।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
by - M H Rabbani

आरम्भिक समाज में स्त्री - पुरुष के संबंधों में विषमता

(1)पितृप्रधान परिवार

- समाज में स्त्रीयों का सम्मान होने के बावजुद भी परिवार पिता के गोत्र एवं जाति से चलता था।
- सिंहासन पर अधिकार पुत्रों का होता था न कि पत्नियों का।

(2) विवाह के नियम

- वंश चलाने के लिए पुत्रों को महत्त्व ।
- पुत्रीयों का पैतृक संसाधनों पर कोई अधिकार नहीं।
- कन्यादान करके पुत्रीयों को पत्ती के घर भेज दिया जाता था।

(3) स्त्री का गोत्र

- समान्यत पितृवांशिकता के आधार पर ही स्त्रीयों का गोत्र पिता या पति के आधार पर निर्धारित होता था।

(4) मंत्रों में पुत्रों की कामना

- ऋग्वेद के मंत्रों से पता चलता है कि पुत्र प्राप्ति की कामना की जाती थी।
- उत्तम पुत्र को जन्म देने वाली स्त्री का समाज मे विशेष आदर होता था उसे पति के प्रेम का सौभाग्य प्राप्त होता था।

आरम्भिक समाज में जाति के अंदर और बाहर सामाजिक विषमता

आरम्भिक समाज में निम्नलिखित सामाजिक विषमताएँ विद्यमान थीं-

(i) वर्ण व्यवस्था -

- यह एक दैवीय व्यवस्था बतायी गयी थी जिसका वर्णन ऋग्वेद के पुरुषसूक्त में किया गया था।
- उसके अनुसार समाज में चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र थे।
- साधारणतया जन्म के आधार पर व्यक्ति की जाति या उसका वर्ण निर्धारित होता था।

(ii) विभाजित श्रम कार्य-

- चारों वर्गों के अलग-अलग कार्य निश्चित थे।
- ब्राह्मणों का कार्य अध्ययन धार्मिक कार्य क्षत्रियों का युद्ध करना, वैश्यों का व्यापार और शूद्रों का अन्य तीनों वर्णों की सेवा करना था ।

(iii) क्षत्रिय राजा -

- ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार केवल क्षत्रिय हो राजा बन सकते थे।

(iv) जाति प्रथा-

- चार वर्णों के अतिरिक्त कई जातियों बन चुकी थीं।
- इसका कारण जंगली समुदाय (निषाद) या नये व्यावसायिक वर्गों की स्थापना थी। उनको वर्ण व्यवस्था में शामिल करने के स्थान पर एक नई जाति में वर्गीकृत कर दिया जाता था।

(v) चार वर्गों के अतिरिक्त समुदाय-

- निषाद जैसे कई अन्य समुदाय थे जिन्हें विचित्र असभ्य और पशुवत कहा जाता था।
- इनका जीवन निर्वाह शिकार कन्दमूल संग्रह आदि द्वारा होता था।
- कई समुदायों को मलेच्छ कहा जाता था। चाण्डालों को अपवित्र माना जाता था।

राक्षस

जिनके आचरण और व्यवहार ब्राह्मणीय ग्रंथों के मापदंड से मेल नहीं खाते थे।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

by - M H Rabbani

द्रोण, हिडिम्बा और मातंग कथा में धार्मिक मानदण्ड

👉 **द्रोण कथा**

- ब्राह्मण द्रोण कुरु वंश के राजकुमारो के गुरु थें।
- निशाद (शिकारी समुदाय) एकलव्य को शिष्य के रूप मे स्वीकार नही किया।
- एकलव्य मिट्टी की द्रोण की मूर्ति बनाकर, गुरू मान कर तीर चलाने में निपुण हो गया।
- द्रोण को एकलव्य ने अपना गुरू बताया।
- द्रोण ने क्रोध में उसका दायाँ हाथ का अंगूठा गुरु दक्षिणा में माँग लिया और उसने खुशी से दे दी।
- निष्कर्ष :- द्रोण ने अपने धर्म का पालन किया क्योंकि वे क्षत्रीय के अतिरिक्त किसी और के गुरु नहीं बन सकते थे।

👉 **हिडिम्बा कथा**

- हिडिम्बा ने कुंति और युधीणषठर के सामने भीम के साथ विवाह का प्रस्ताव रखा।
- इस शर्त पर वे राजी हुए कि भीम दीन भर हिडिम्बा के साथ रहेगा लेकिन रात को उनके पास लौट जाएगा।
- भीम और हिडिम्बा को घटोत्कच नामक पुत्र हुआ।
- निष्कर्ष :- इससे स्पष्ट होता है कि ब्राह्मणीय नियम टुटने की शुरुआत हो चुकी थी।

👉 **मातंग कथा**

- मातंग चण्डाल परिवार का लड़का
- दिथ मांगलिक नामक लड़कि ने उसे देखकर शोर मचाया कि चंडाल की नजर उस पर पर गई।
- मातंग को दंडित किया गया। अत: वह दरवाजे के बाहर आमरण वर्त धारण कर लिया तथा अलौकिक शक्ति को प्राप्त किया।
- मातंग ने उसी कन्या से विवाह किया ।
- मातंग को मनडवय कुमार नाम का पुत्र प्राप्त हुआ जिसने तीनों वेदो को कंठस्थ कर लिया ।
- निष्कर्ष :- ब्राह्मणीय नियमों का विरोध शुरू। यह बात भी गलत साबित कि विद्वान सिर्फ ब्राह्माण ही हो सकता है।

मलेछ

- ब्राह्मण यायावार पशुपालकों के समूह को संदेह की दृष्टि से देखा करते थे ।
- क्योंकि इन्हें किसानों के सांचे मे आसानी से ढाला नहीं जा सकता था। ऐसे लोगों को मलेछ कहा जाता था।
- कभी-कभी उन लोगों को जो संस्कृत भाषा नहीं जानते थे, मलेछ नाम से पुकारा जाता था।

संस्कृत ग्रंथ में व्यापारियों के लिए प्रयुक्त शब्द - वणिक

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

by - M H Rabbani

मानचित्र प्रश्न

प्रश्न . इस अध्याय के मानचित्र की अध्याय 2 के मानचित्र से तुलना कीजिए। कुरु-पांचाल क्षेत्र के पास स्थित महाजनपदों और नगरों की सूची बनाइए।

उत्तर- दोनों समय में राज्य, महाजनपद, नगरों का उदय और स्थापना उत्तरी भारत में हुई जहाँ पर नदियों का जाल तथा उपजाऊ भूमि विद्यमान थी। कुरु-पांचाल क्षेत्र के पास महाजनपद और नगर निम्नलिखित थे-

(i) महाजनपद - कुरु, पांचाल, शूरसेन, मत्स्य, कोसल, काशी, वत्स ।

(ii) नगर- इन्द्रप्रस्थ, अहिच्छत्र, मथुरा, श्रावस्ती, कौशाम्बी, वाराणसी।

अध्याय 2 का मानचित्र–

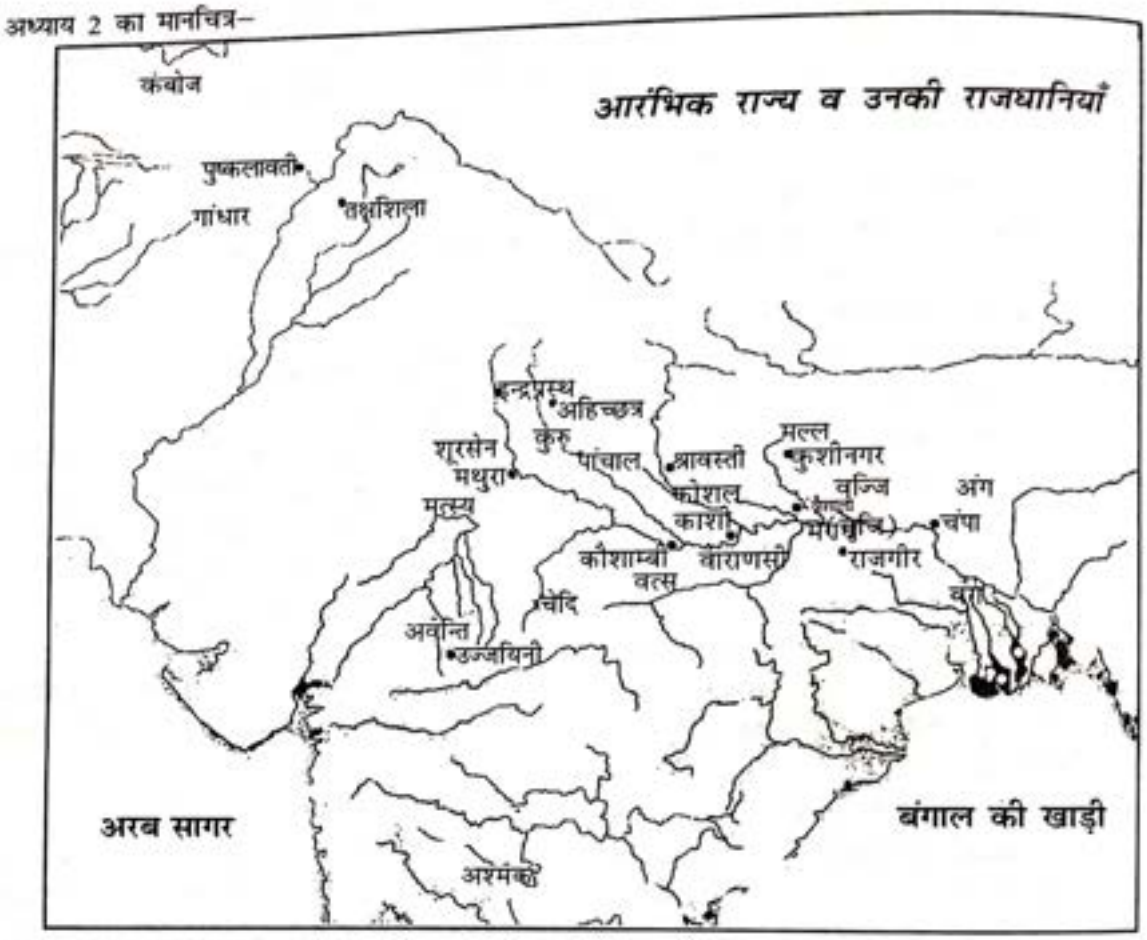

अध्याय 3 का मानचित्र–

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

by - M H Rabbani

मानचित्र प्रश्न

प्रश्न 1. भारत के दिए हुए राजनीतिक रेखा मानचित्र पर निम्न महाजनपद और नगर वर्शाइए-
(1) वन्जि, (2) मगध, (3) कोशल, (4) कुरु, (5) पांचाल, (6) गान्धार, (7) अवन्ति, (8) राजगीर, (9) उज्जयिनी, (10) तक्षशिला, (11) वाराणसी।

by - M H Rabbani

मानचित्र प्रश्न

प्रश्न . भारत के दिए हुए राजनीतिक रेखा मानचित्र पर असोक के शिलालेखों के निम्न स्थानों को दर्शाइए-

(1) पाटलिपुत्र- सिंह शीर्ष

(2) मुख्य महाशिलालेख-गिरनार, सोपारा, कलसी, शिशुपालगढ़

(3) स्तम्भ लेख- साँची, टोपरा, मेरठ, कौशाम्बी, सारनाथ

उत्तर :-

(1) पाटलिपुत्र
(2) गिरनार
(3) सोपारा
(4) कलसी
(5) शिशुपालगढ़
(6) साँची
(7) टोपरा
(8) मेरठ
(9) कौशाम्बी
(10) सारनाथ

by - M H Rabbani